त्रियA पत्रिकA

हाइकु तनका व लघु कविताओं की पत्रिका

शरद संस्करण

त्रिया पत्रिका - नवम्बर। दिसम्बर २०२२ - चतुर्थ संस्करण

Artist's Statement

Consonance

For me, this artwork is symbolic of freedom. After breaking free from the bonds that are the liabilities of loss and love, the creatures, be them aerial or aquatic, imaginary or real, mingle in the depths of the ocean and horizon together. The vermillion sun, the turquoise rays and the sandy clouds celebrate the jarring differences of the animals' lives. The vibrant hues work together to create a scene that looks appealing to the eye. Nothing seems out of place. To me, this is how the real world, and its ever-changing people should act. We should love the things that make the other person unique, while loving ourselves too. That is the only way we can achieve harmony.

-Reet Kaur Sethi

Reet Kaur Sethi is a student of class 10, Bal Bharti Public School, GRH Marg, New Delhi

सामंजस्य

मेरे लिए यह कलाकृति स्वतंत्रता का प्रतीक है। प्रेम और क्षति के परिणामस्वरूप, दायित्व बन कर आए बंधनों से मुक्त होने के बाद जीव, चाहे वे हवाई हों या जलीय, काल्पनिक या वास्तविक, समुद्र और क्षितिज की गहराई में एक साथ मिल जाते हैं। सिंदूरी सूरज, फ़िरोज़ा किरणें और रेतीले बादल जानवरों के जीवन की विविधताओं का जश्न मनाते हैं। जीवंत रंग एक साथ मिलकर एक ऐसा दृश्य बनाते हैं जो आंखों को आकर्षक लगता है। कुछ भी जगह से बाहर नहीं लगता। मेरे लिए, वास्तविक दुनिया और इसके हमेशा बदलते रहने वाले लोगों को इसी प्रकार कार्य करना चाहिए। हमें उन चीजों से प्यार करना चाहिए जो दूसरे व्यक्ति को अद्वितीय बनाती हैं, साथ ही खुद से भी प्यार करना चाहिए। यही एकमात्र तरीका है जिससे हम सद्भाव प्राप्त कर सकते हैं।

-रीत कौर सेठी

रीत कौर सेठी बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी आर एच मार्ग, नई दिल्ली की कक्षा १० की छात्र हैं

तेजी सेठी

प्रबंध संपादक
संकल्पना व आतंरिक
डिज़ाइन

वैभव जोशी, प्रीती चाहर

सम्पादन (लघु कवितायें)
पत्रिका संशोधन

तेजी सेठी, प्रीती चाहर

सम्पादन व अनुवाद (हाइकु)

रीत कौर सेठी

कवर आर्ट

त्रिया पत्रिका - नवम्बर | दिसम्बर २०२२ - चतुर्थ संस्करण

त्रिया में प्रकाशित कृतियों में से अधिकतम हाइकु व तनका इंग्लिश लैंग्वेज जर्नल्स में पूर्व प्रकाशित हैं। जर्नल्स के नामों व नेहा आर कृष्णा की हाइकु का लिप्यन्तरण किया गया है। टीम त्रिया ने अनुवाद करते वक़्त इस बात का विशेष ध्यान रखा है - मूल कविताओं के सार को बनाए रखा जा सके। अनुवाद व प्रकाशन में हुई त्रुटियों के लिए टीम त्रिया क्षमा प्रार्थी है। मूल कृतियों का कॉपीराइट कवि का है, त्रिया केवल इन्हें अनुवाद कर प्रकाशित करने का स्वामित्व रखती है।

कॉपीराइट त्रिया

कवि चौपाल

हाइकु/तनका

मोना बेदी
काशियाना सिंह
जेनिफर हैम्ब्रिक
विभा मल्होत्रा
कला रमेश
नीना सिंह
रॉबर्टा बीच जैकबसन
जूली केलसे
त्वीट वार्न डौघ
लक्ष्मी अय्यर
रवि किरण
वंदना श्रीवास्तव
लॉरलिन डे ला क्रूज़
द्वैपायन नायर
जेरोम बर्गलंड

लघु कविताएँ

सुधांशु शर्मा
सोनल
रश्मि भट्ट
अनामिका सिंह

तनका आर्ट

नीना सिंह
लक्ष्मी अय्यर

त्रिया उल्लेख

डॉ. जोशना बैनर्जी आडवानी की लघु कविताएँ

त्रिया समीक्षा

नो अर्जन्सी टू बी होम बाय नेहा आर कृष्णा

हाइकु / तनका/ लघु कविताएँ

मीना बेदी

उल्का बौछार
रहस्य जो मैंने
छुपाए तुमसे

औटम मून हाइकु जर्नल ५:२

बचपन की झील
तंद्रा भंग करता
एक पत्थर

औटम मून हाइकु जर्नल ५:२

उलझी जप माला मेरी सारी इच्छाएँ अवयवस्थित

क्रेयट्रिक्स ५७

मीना बेदी पेशे से एक डॉक्टर हैं जो दिल्ली में रहती हैं । वे बचपन से कविता लिख रही हैं लेकिन कुछ साल पहले उन्होंने जापानी विधा - हाइकु लिखना शुरू किया। । "द्वे, यू एंड मी " और "डांसिंग मूनलाइट " उनके प्रकाशित कविता संग्रह हैं। वह अपने पति, दो बच्चों और एक कुत्ते के साथ रहती हैं । उन्होंने कई हाइकु प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते हैं और जापान फेयर २०२१ में उनकी हाइकु का सम्मानजनक उल्लेख किया है ।

काशियाना सिंह

भीनी सुगंध
दादी का चेहरा
अब हुआ मेरा

घटता चाँद
उथली साँस का
विलुप्त होना

सर्पिन छाया
अपने ही शरीर में
विलीन दादी

ख़ाली घींसला
अंत्येष्टि के बाद
कपड़े तहना

जब काशियाना लिख नहीं रही होतीं, तो वह हर दिन अपने TEDx टॉक थीम को जी रही होती हैं । वह वर्तमान में कविता संपादक के रूप में कार्य कर रही हैं । यावानिका प्रेस द्वारा उनकी चैपबुक क्रश्ड एन्टहिल्स १० शहरों का एक यात्रा वृतांत है । हाल ही में उनका एक नया काव्य संग्रह - वीमेन बाय द डोर प्रकाशित हुआ है।

जेनिफर हैम्ब्रिक

बिसरी रात
मेरे स्वपन बने
द्वीप समूह

हेलिओस्पैरो, सितंबर २०२२

जितना होता
उतना लम्बा नहीं
गर्मी का दिन

वेल्स हाइकु जर्नल, औटम २०२१

गहरी साँस लो और थाम लो शरद सूर्यास्त

मॉडर्न हाइकु ५३.२ समर २०२२

अपनी शानदार कल्पना, कुशल शिल्प कौशल, और विशिष्ट आवाज के लिए जानी जाने वाली , चार बार पुशकार्ट पुरस्कार और नेट नामांकित जेनिफर हैम्ब्रिक एक नामी लेखिका हैं। वे इन हाई वीड्ज़ (विजेता स्टीवंस मैनउस्क्रिप्ट पुरस्कार, राष्ट्रीय फेडरेशन ऑफ स्टेट पोएट्री सोसाइटीज) जॉयराइड (रेड मून प्रेस), और अन्स्कैढ्ड (नाइटबैलेट प्रेस)नामक पुस्तकों की लेखिका हैं। उन्हे हाइकु कनाडा की ओर से 2022 मैरिएन ब्लूगर बुक अवार्ड से सम्मानित किया गया व टचस्टोन प्रतिष्ठित पुस्तकें पुरस्कार हाइकु फाउंडेशन के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया। एक शास्त्रीय संगीतकार, सार्वजनिक रेडियो प्रसारक, वीडियो निर्माता, वेब निर्माता और सांस्कृतिक पत्रकार, जेनिफर हैम्ब्रिक कोलंबस, ओहियो में रहती हैं ।

विभा मल्होत्रा

सूर्यास्त
सागर में रिसता
सिंदूरी आकाश

निर्माण स्थल
रेत के महल
बनाते बच्चे

तिरछी किरणें...
यादें तुम्हारे
आलिंगन की
मेरे आस-पास

विभा मल्होत्रा एक लेखिका, कवि और संपादक हैं। उन्होंने न्यूकासल यूनिवर्सिटी, यूके से क्रिएटिव राइटिंग में मास्टर्ज़ किया है। उनका काम फ़ेल्ड हाइकु, हाइकुकथा, वासाफिरी, किताब, म्यूज इंडिया, रेड फ़ैज़, टिप्टन पोएट्री जर्नल और द टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित हुआ है। डोरलिंग किंडरस्ले के संपादक के रूप में, विभा ने क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय, द रॉयल फ़ैमिली, ऑल अबाउट एवरीथिंग जैसी पुस्तकों का संपादन किया है। विभा ने दो किताबें लिखी हैं: लवफ्लेक्स (प्यार पर गद्य कविता का एक संग्रह) और बेस्टसेलिंग सेल्फ-हेल्प बुक, नो योर वर्थ।

कला रमेश

ग्रीष्म आकाश
मंदिर के कबूतर
करते कलाबाज़ी
पवन गीत में

बिऑन्ड द हराइज़न बिऑन्ड

साबुन के बुलबुले
कितनी नरमाई से
हँसती है माँ

बिऑन्ड द हराइज़न बिऑन्ड

कोयल की कुहुक
भोर से पहले
पत्तों का अंधेरा

बिऑन्ड द हराइज़न बिऑन्ड

पुषकार्ट पुरस्कार नामांकित, कला रमेश त्रिवेणी गुरुकुलम मेंटमेंरशिप प्रोग्राम २०२१ व त्रिवेणी हाइकाई इंडिया की निदेशक हैं। वह नाद अनुनाद हाइकु एंथोलॉजी की मुख्य संपादक हैं। उनकी पुस्तक "बियॉन्ड द होराइजन बियॉन्ड" को खींद्रनाथ टैगोर लिटरेरी पुरुस्कार के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था। हार्परर् कॉलिंस इंडिया द्वारा प्रकाशित, "द फारेस्ट आई नो" उनकी नवीनतम पुस्तक है। कला २०११ से सिम्बयोसिस इंटइंरनेशनल यूनिवर्सिटी में ६० घंटे का हाइकाई कोर्स पढ़ा रही हैं। हाइकु को रोजमर्रा के स्थानों पर लाने के लिए, उन्हों ने कई परियोजनाओं की शुरुआत की और भारत में आठ हाइकाई उत्सवों का आयोजन किया।

नीना सिंह

जल कुमुदिनी
स्वयं से ऊपर
ध्यान

ब्रास बेल थीम वाटर १.८.२२

सुनना संगीत
घने वन का...
शरद ऋतु की बारिश

अन्डर द बाशो ५.९.२०२२

ख़ामोश रात
स्पंदित करती
सिकड़ा का रुदन
मात्र शब्दों से
बहुत गहरी यह प्यास

हाइकु कथा

नीना एक बैंकर व कवि हैं, उनकी हाइकु, सेनर्यु, तनका, चेरिता, हाइगा और रेंगा को नियमित रूप से पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है। उन्होंने कविता की दो पुस्तकें स्वयं प्रकाशित की हैं - "विस्पर्स ऑफ द सोल" - द जर्नी विदिन व "वन ब्रेथ पोएट्री" । वह वंचित बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक गैर-लाभकारी संस्था चलाती हैं।

रॉबर्टा बीच जैकबसन

युद्ध व शांति
के बीच झांकता
पूनम का चाँद

अकितसु क्काटर्ली फाल २०२२

शाम की चाय में
अपनी कहानियाँ
घोलते हम

अकितसु क्काटर्ली फाल २०२२

गर्मी की छुट्टियां
दो मुद्राओं के बीच
फँसी मैं

द्द सिकड़ास क्राइ समर २०१९

७० वर्षीय रॉबर्टा बीच जैकबसन शब्दों की ओर आकर्षित रही हैं। कविता, पहेली, गीत, फ्लैश फिक्शन, स्टैंड-अप कॉमेडी में उनकी रुचि रही है। वह एक अमेरिकी है जिन्होंने यूरोप में अपना अधिकांश वयस्क जीवन बिताया।

जूली ब्लॉस केल्सी

शरद सूर्यास्त
की लुप्त गर्माहट -
बटरनट स्क्वाश

फ्रागपॉण्ड ४३.३ फाल २०२०

अलग-थलग बारिश -
पुरानी बीमारी का
दर्द भरा
अकेलापन

पोइट्री कॉर्नर अगस्त १ २०१८

मौत की घड़ी -
हवा की नरम सांस
को सुनना

फ्रागपॉण्ड ३९.३

जूली ब्लॉस केल्सी ने २००९ में हाइकु लिखना शुरु किया। हाइकु और संबंधित रूपों की उनकी पहली चैपबुक, 'द कॉल ऑफ वाइल्डफ्लावर', पेरेंटिंग और मातृत्व के बारे में है। २०२१ में, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महिला हाइकु प्रतियोगिता जीती, और वह गोल्डन हाइकु कविता प्रतियोगिता की डीसी एरिया की विजेता रही हैं । जूली हाइकु फाउंडेशन के बोर्ड पर है, जहां वह एक कॉलम लिखती है, न्यू टू हाइकु । आप उन्हें इंस्टाग्राम (@julieblosskelsey) और ट्विटर (@mamajoules) पर फॉली कर सकते हैं।

त्वीट वार्न डौघ

बहती धारा
चमकीले पत्थरों में
धँसे टखने

समुद्री शाम
नारंगी सूरज की
थकी छाया

त्वीट वार्न डौघ मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया में रहती हैं। उनकी कृतियाँ हाइकु यूनिवर्स, टेक फ़ाइव, फ़ील्ड हाइकु, स्कार्लेट ड्रैगनफ़्लाई, हाइकु फ़ाउंडेशन, कोल्ड मून जर्नल इत्यादि में प्रकाशित हुई हैं। वे बाग़वानी, गाने लिखना व ऐब्स्ट्रैक्ट पेंटिंग करना पसंद करती हैं।

लक्ष्मी अय्यर

बाजारी भीड़ भाड़
बाँसुरी वाले की धुन
घर लायी

२०२१ हाइकु नॉर्थ अमेरिका कान्फ्रन्स ऐन्थालजी

युद्ध संग्रहालय
चुभती चुप्पी
बंदूक़ कक्ष में

पोइट्री पी जर्नल ३:२२

मलबे में लिपटा
एक नवजात
कब तक सहे
इस दर्द को
नौ महीने पश्चात् भी ?

फेमकु मैग #३४

इस शब्दहीन कविता से मोहित लक्ष्मी अय्यर को अपने अनुभवों के माध्यम से कविताएं लिखना पसंद है। उन्होंने कला रमेश द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया और कई प्रसिद्ध हाइकाई जर्नल्स के पन्नों में उनकी कविताओं को पाया। वह त्रिवेणी हाइकाई इंडिया से जुड़े होने में गर्व महसूस करती हैं क्यूंकि केवल यही एक ऐसी वेबसाइट है जो विशुद्ध रुप से हाइकाई के लिए बनी है।

रवि किरण

बादल रहित आकाश
शंख में उफनता
तूफ़ान

सूर्य किरणें
बादलों से छनती
शब्द अनकहे

वे सब नाम
जो कभी न जान पाऊँ
बनफूल

रवि पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर प्रोफेशनल हैं। सब कुछ जापानी - बोनसाई से लेकर जापानी रसोई के साधन उन्हें अकर्षित करते हैं। हाइकु - रवि के लिए एक यात्रा है, जिसे वह अपने पेशेवर दिनचर्या के बीच में तनाव से मुक्ति का एक साधन मानते हैं। रवि की हाइकु कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

वंदना श्रीवास्तव

समुद्र की लहरें
क्षणभंगुर सी
ज़िन्दगी जैसे

प्रेम के ढाई अक्षर
आधा जो ज्यादा,
वो किसके हिस्से?

कहीं दूर
एक गाना पुराना
तुम्हारी याद में
भीगा मन

वंदना श्रीवास्तव एक शिक्षक हैं, जिन्होंने देश भर के विभिन्न स्कूलों में पढ़ाया है, और अब छात्रों को सॉफ्ट स्किल और स्पोकन इंग्लिश में प्रशिक्षित करती हैं। गया में जन्मी और पली-बढ़ी, फिर एक वायु सेना अधिकारी से शादी की, वह कई शहरों में रही हैं और हमारे देश की विविध संस्कृतियों से अच्छी तरह परिचित हैं। लेखन के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने में उन्हें खुशी मिलती है। उनका मानना है कि हर अनुभव में एक कहानी होती है। जीवन पर चिंतन करना, यादों को संजोना, इसमें अधिक अंतर्दृष्टि जोड़ना, जीने के अपने दर्शन को साझा करना, यही उसे लिखने का कारण देता है। वह हिंदी और अंग्रेजी दोनों कविताएं और लघु कथाएँ लिखती हैं।

लॉरलिन डे ला क्रूज़

आकाशगंगा
बच्चे की सांस की
अल्पकालिकता

दोहराती
मेरे प्रतिज्ञान को
बसंत की सुबह

शीत लहर
मेरी पकड़ से छूटता
दादा का हाथ

लोरलिन डे ला क्रूज़, अरेवालो, ट्विन डीलाइट्स, हकुना मटाटा (एक हाइकु / हाइगा संग्रह) और हाइनाकू की स्व-प्रकाशित लेखिका हैं! इट इस पैन्डेमिक! आई एम बेलेट, एकोविडा डिटो (कलेक्शन ऑफ पंस और वर्ड प्ले का संग्रह) उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं । उनकी कविताओं को एंथोलॉजी और पत्रिकाओं जैसे कि द हाइकु फाउंडेशन, फेल्ड हाइकु , त्सुरी-डोरो, स्पिलवर्ड्स और लोथलोरिएन पोएट्री जर्नल में चित्रित और प्रकाशित किया गया है। वह फिलीपींस में राइट योर लिगेसी समुदाय की सदस्य भी हैं।

द्वैपायन नायर

पहली मुलाक़ात
अंगारे तपाता
भुट्टे वाला

अन्डर द बाशो २०२०

पितृ पक्ष
तर्पण की काँव काँव
सारे आकाश में

लोथलीरें पोइट्री जर्नल, २०२२

धान का खेत
सूर्यास्त समय
विमान का पीछा करता
बच्चों का झुंड

हाइकु कथा, संस्करण ११

भारत के असम के सिलचर शहर के रहने वाले द्वैपायन नायर हाइकु कवि हैं। वह माइक्रोपोएट्री लिखते हैं, ज्यादातर हाइकु और तनका कविताएँ। उनकी कृतियों को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय जर्नल्ज़ जैसे हाइकु फाउंडेशन - हाइकु डायलॉग, निक वर्जिलियो हाइकु फाउंडेशन - हाइकु इन एक्शन और फ्रेशऑउटमैग में स्थान मिला है। उन्हें हाइकुनिवर्स, कोल्ड मून जर्नल और त्रिवेणी हाइकाई इंडिया के प्रतिष्ठित मासिक हाइकु कथा में भी प्रकाशित किया गया है।

जेरोम बर्गलंड

हिमपात
आए बिन बताए
संघर्ष कठिन

बेटर देन स्टारबक्स

नैतिक सापेक्षवाद
कोई पछतावा नहीं
नाग को

जेरोम बर्गलंड ने दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के सिनेमा-टेलीविजन प्रोडक्शन कार्यक्रम से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और मिडवेस्ट, (जहां उनका जन्म और पालन-पोषण हुआ था) में लौटने से पहले मनोरंजन उद्योग में एक दशक बिताया। तब से उन्होंने डिश वॉशर से लेकर पैरालीगल, नाइट वॉचमैन से लेकर हार्ट वाल्व के असेंबलर के रूप में काम किया है। जेरोम की कई हाइकु , सेनरयु और हाइगा को ऑनलाइन और प्रिंट में प्रदर्शित किया गया है, हाल ही में असाही शिंबुन, बेयर क्रीक हाइकु , कोल्ड मून जर्नल, डेली हाइगा, फेल्ड हाइकु , हाइकु डायलॉग, स्कारलेट ड्रैगनफ्लाई और ज़ेन स्पेस में उनकी कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं । इसके अलावा वे एक पुरस्कृत ललित कला फोटोग्राफर हैं, जिनके काले और सफेद चित्रों को न्यूयॉर्क, मिनियापोलिस और सांता मोनिका गैलरी में दर्शाया गया है।

तनका आर्ट कॉन्सेप्ट : तेजी
अनुवाद: नीना सिंह

मलबे में लिपटा
एक नवजात
कब तक सहे
इस दर्द को
नौ महीने पश्चात् भी ?

तनका आर्ट कॉन्सेप्ट : तेजी
अनुवाद: लक्ष्मी अय्यर

सुधांशु शर्मा

शब्दों ने लिया मेरा पक्ष
भाव ने दिया मेरा साथ
अर्थ ने रोक लिया मुझे
कई बार अनर्थ करने से .

न्याय में होती रही देर
टूट जाता किसी क्षण धैर्य
एक छोटी सी कविता
तैरती रही मेरे मन के पास
बना रहा मुझमें
एक अनजाना सा विश्वास

पाठ्यपुस्तक की कुछ पंक्तियाँ
छपी रह गयी मेरे हृदय पर
और फिर पाठ्यक्रम से
बाहर के प्रश्नों पर भी
निरुत्तर नहीं हुआ मैं

बीच मँझधार में
अकेला खड़ा था जब
डायरी में बिखरे नन्हे-नन्हे अक्षर
छोटी-छोटी मात्राएँ
और प्यारे -प्यारे शेर
सब हो गए लामबंद
और थाम कर मुझे
बचा लिया डूबने से !

सोनल

कहुक 1

नन्हीं सी एक कुहुक
गूंजी
और खिच गया
एक लंबा -गहरा मौन
प्रतीक्षा में ठहरी है हवा
बोली चिड़िया बोली!
पूरा करो अधूरा गान!!

कहुक 2

अनजाने पंछी की
एक नन्हीं कुहुक कौंधी
सन्नाटे में पड़ गया
एक शब्द बीज
न जाने कितने अंतरे
डूबते उतराते रहेंगे
दिनभर!

कुहुक 3

एक चिड़िया बोलती है
पूरा वन बींधती है
फुर्र से उड कर
पिरोती है एक उड़ान

पहाड़ की याद 1

घुन्ध भरे प्रभात में
पहले उगता है पहाड़
फिर पंछी
फिर आदमी
और आखीर में
सूरज !

पहाड़ की याद 2

पहाड़ की चोटी
धरती की कुदाल है
आसमान में कुआ
खोदती
रोज रोज निकालती हुई
एक आग का गोला

नदी 1

एक अनचिन्हीं नदी
सूने जंगल से गुजरती हुई
मन भर कर बोलती है
होकर निश्चिन्त -
यहाँ कौन सुनता है!

नदी 2

सूख गयी एकाएक हमारे
बीच से
वह बहती धारा
नदी -पहाड़ खेलते हुए
हम
अब कैसे जाए
एक दूसरे के पास!

नदी 3

वह गयी
तो दिखाई दी
गहरी -खाई
तरल सी नीली धारा
पाटती थी जिसे!

अनामिका सिंह

मैं रुद्र के प्रति
आश्वस्त हूं
और प्रेम के प्रति समर्पित
क्या आस्थाओं के चरम पर
दुख ठहरेगा?

हंसती हुई प्रेमिका
प्रेम करने वाले प्रेमियों को मिली
रोती हुई प्रेमिका
श्राप थी
स्वयं की हंता

आज भी किताबों में
छिपे है
कुछ जरूरी बेनाम श्वेत पत्र
आपातकाल की
संध्या बेला में
मैं सघन चेहरा उकेरती हूं
जो अनदेखा है !

और अंततः
मेंरे पास कुछ कहानियां
शेष रह जाएगी
जिन्हें लादकर स्मृति पर
मैं ले जाना चाहूंगी
इस लोक के पार!

रश्मि भट्ट

विलय

बारिश की बूँदें
स्पर्श पर बिखर जातीं
एक कोलाहल...
बिखरना ही होता है
एक हद के बाद
विलय का प्राण यही चाहता
तुम्हारी सम्पूर्णता पूर्ण नहीं
टूट टूट कर घुलना होता है
उदासी फिर भी धड़केगी
एकांत रिक्त नहीं होता
सत्य यही...
जीवन यही...

संवाद हीनता

भरी भरी चुप्पियों की थकान
यदा कदा हावी होती
शब्दों की हड़बड़ाहट ही नहीं
वो ठहरे ठहरे इतने सघन हो गये
कि उनसे भाषा का सत्यापन छूट रहा
कलात्मक बनावट वाला जुलाहा मन
नहीं साध पा रहा गत्यात्मकता
भविष्य की संवादहीनता
अपने प्रथम चरण में

देह

देह का कार्य व्यापार अनंत
श्वास प्रश्वास के चलने तक
घटन और अघटन के बीच
यह गति भाव अभाव ठहराव
में लिप्त
देह के द्वारा ही संभव
चेतना की पराकाष्ठा,
ध्यान ज्ञान संज्ञान आदि
किसी महत् आदर्श के लिए
सिद्ध हो जाए जब हमारा होना
देह प्रणम्य हो जाती
देह ईश्वर हो जाती

रश्मि भट्ट, (एम. एस. सी बी एड) की रचनाएँ कादंबिनी पत्रिका, गेल राजभाषा पत्रिका में निरन्तर प्रकाशित हुई हैं।

त्रिया उल्लेख

डॉ. जोशना बैनर्जी आडवानी की लघु कविताएँ

अलविदा होते समय ....

अलविदा होते समय
आँख, आँख में डालोगे तो बहेंगे अश्रु
हाथ, छुएगा हाथ तो देह न हिल सकेगी
पाँव पाँव न आगे बढ़े तो रास्ते कठिन लगेंगे

अलविदा होते समय
दिखाना स्वयं को किंचित हठी
अट्टहास करना

अलविदा होते समय
अर्धशव न बनना।

अरे ....

अरे! परंतु यह किस प्रकार संभव है
किस प्रकार लज्जा रहेगी मन में
किस प्रकार मौन के लिए जगह बनाई जाए
घावों को सूर्य तक किस प्रकार ले जाया जाए
तारापथ को देखते हुए किस तरस स्वप्न सच हों

किस प्रकार जनहीन जगहों पर घर बनाऊँ
औलुक्य से कैसे करू मित्रता
किस प्रकार बांग्लाभाषी होते हुए मछलियों की रक्षा करूँ

अरे! मुझे क्यों धकेला इस ग्रह पर ?

भ्रम ....

विश्वास और अविश्वास के ठीक बीच
तनकर खड़ा
तुम्हारे काँपते हृदय को थामता हुआ
तुम्हारी बुद्धि को छलता है बड़ी ही दिव्यता
के साथ

तुम्हारी इंद्रियों को दाना डालता है

भ्रम
एक अविकसित विकारयुक्य
आस्था है केवल

पक्षी जितना पिंजड़े में पंखहीन।

जोशना बैनर्जी आडवानी आगरा के स्प्रिंगडेल मॉर्डन पब्लिक स्कूल में प्रधानाचार्या पद पर कार्यरत हैं। इनका जन्म आगरा में ३१ दिसंबर, १९८३ को हुआ था। पिता बिजली विभाग में कार्यरत थे। सेंट कॉनरेड्स इंटर कॉलेज, आगरा से शिक्षा ग्रहण करने के बाद, आगरा विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद बी.एड, एम.एड और पीएचडी की। इनका पहला कविता संग्रह, 'सुधानपूर्णा', दीपक अरोड़ा स्मृति सम्मान के तहत प्रकाशित हुआ है, जो इन्होंने अपने स्वर्गीय माता पिता को समर्पित किया है। दस साल पीजीटी लेवल पर अंग्रेज़ी पढ़ाने के बाद इन्होनें प्रधानाचार्या पद संभाला। इनका अधिकांश समय कोलकाता में बीता है। बोलपुर और बेलूर, कोलकाता में रहकर इन्होंने कत्थक और भरतनाट्यम सीखा। प्रधानाचार्या होने के साथ साथ वर्तमान में ये सीबीएसई के वर्कशॉप्स कराती हैं और सीबीएसई की किताबों की एडिटिंग भी कर रही हैं। इनकी कविताओं में बांग्ला भाषा का प्रयोग अधिक पढ़ा जा सकता है। इनका दूसरा कविता संग्रह 'अंबुधि में पसरा है आकाश' वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। रज़ा फाउंडेशन की ओर से इन्हें शंभू महाराज जी पर विस्तृत कार्य करने के लिए 2021 में फैलोशिप मिली है। कविताओं का अंग्रेज़ी, बांग्ला, नेपाली, मराठी, मैथिली और पंजाबी में अनुवाद हुआ है।

त्रिया समीक्षा

नी अर्जन्सी टू बी होम बाय नेहा आर कृष्णा

नो अर्जन्सी टू बी होम

नेहा आर कृष्णा

नेहा का पहला हाइकु और तनका संग्रह, 'नो अर्जन्सी टू बी होम' पलों और यादों से बुना चित्रपट है। नेहा खुली बाहों से हाइकाई की भावना को गले लगाती हैं और इस संग्रह के पन्नों के भीतर हाइकाई कला व तकनीक में डूबी उनकी कविताओं की परिपक्वता को महसूस किया जा सकता है।

सिटी ऑफ अनदर लैंग्वेज, उनकी पहली कविता, सांस्कृतिक अलगाव की गहरी भावना पैदा करती है और एक अप्रत्याशित मोड़ लेती है जब वह कहती हैं "आई फ़ील नो अर्जन्सी टू बी होम"। क्या वह एक मनमौजी हैं जो जीवन के हर क्षण का आनंद लेती हैं या एक वैरागी जो स्वयं में शांति खोजती हैं? मेरे लिए, वह एक मुसाफिर हैं जो अपनी यात्रा पर कहानियों के टुकड़े इकट्ठा करती हैं

जैसे बाशो की यह हाइकु

फॉरेवर अफुट
थॉट बाशो, सीकिंग द वे
आई लिव लाइक दिस

नेहा की कविताएँ ध्वनि और दृश्य प्रधान हैं , उनमें एक सिनेमाई तत्व है, वह बड़ी ही बारीकी से प्रकृति में हुए बदलाव को दर्शाती हैं।

जेनटल रेन
ईवन ऑन द ग्रेव्स
विद नो फ्लावर्स

अ रिपल
इन द पॉण्ड
मून शिवर्स

उनके पास रोजमर्रा की घटनाओं को शब्दों में ढालने की कला है और उसे मनोरंजक और हास्य में बदलने की क्षमता।

फर्स्ट डेट
लूस थ्रेड ऑफ हिस स्वेटर
टेक्स आल माइ अटेन्शन

उनकी कविताएँ, अनुपस्थिति, एकांत और निराशा जैसे गहरे मनोभावों को बड़ी सहजता से छूती हैं । वे लाइन आर्ट की तरह, पाठकों की कल्पना के लिए पर्याप्त खाली स्थान छोड़कर एक कहानी की रूपरेखा को स्केच करती हैं।

वूल्फ मून
ओपनिंग माइ इयर्स
टू हिस साइलन्स

कैनवस ब्लूस
विद माइ फिंगर
आई स्टर द स्काइ

मुझे नेहा के कुछ हाइकु का हिंदी अनुवाद करने का मौका मिला है। वह अपने कई हाइकु में हिंदुस्तानी शब्दों का ज़ायका बरकरार रखती है।

लाँग गॉसिप
ग्रैन्डमाँ पुटस अनदर पान
इंटू हर माउथ

मूनडस्ट
हेना ऑन माय हैंड्स हैस
द कलर ऑफ हिस लव

उनके शब्द बेबाक हैं। वे अपने पैरों पर खड़े हो खुद के लिए बोलते हैं।

सेलेक्टिंग गॉडस
रीलिजन विल डिसाइड हू
आय शुड लव

जिस संक्षिप्तता और प्रतिभा के साथ वह लिखती हैं, वह एक जादूगर के रूप में सामने आती हैं जो अपनी कविताओं की सिलवटों में छोटे छोटे करतब छुपा कर रखता है।

विद ईच फोल्ड
आई अनफोल्ड द आर्टिस्ट इन मी
ऑरिगामी क्लास

स्प्रिंग रेन
आई वाक टू हिम
बेयर फुट

मेरे व्यक्तिगत पसंदीदा में से एक सेनरीउ है जिसमें उर्दू ज़ुबान ज़ायका है। मैं काफिया के साथ नेहा के जुड़ाव से अवगत हूँ और उनकी कुछ रचनाओं में उर्दू शायरी की सरसराहट सुन सकती हूँ।

पार्टिंग किस
ही लीव्स हिस उर्दू
ऑन माय टंग

एक और हाइकु जिसने मुझे आकर्षित किया

समर सॉन्ग
ट्री ब्रांचएस
लेडन विद मूनलाइट

मूनलाइट (चांदनी) ने युगों से कवियों की कल्पना को रोशन किया है। यह इश्क, तनहाई , हैरत और आरजू का प्रतीक है। जब वह कहती हैं, 'लेडन विद मूनलाइट', तो यह इनमें से कोई भी या सभी हो सकते हैं।

जैसे जैसे मैं पुस्तक के पन्नों से गुज़रती हूँ, खुद को उनके शब्दों की भूलभुलैया में पाती हूँ , नेहा ने दृश्यों, ध्वनियों और स्वादों को बड़ी कुशलता से ढाला है। मुझे यकीन है कि पाठक हर कविता में ढली नजाकत का आनंद उठाएँगे।

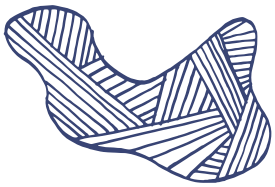

सबमिशन निर्देश

कृपया हमें triyamag@gmail.com पर दस अप्रकाशित हाइकु/सेनर्यु/तनका/लघु कविताएं मेल करें।

हमें आप प्रकाशित इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु भी भेज सकते हैं। कृतियों के साथ पहले प्रकाशन क्रेडिटस शामिल होने चाहियें।

इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु का हिंदी में अनुवाद इन हाउस एडिटर्स द्वारा किया जाएगा।

कविताएं पठन अवधि के अंत में साइट पर प्रकाशित होंगी।

पठन अवधि के बाद प्रस्तुत कविताएं केवल अगले संस्करण में प्रकाशित की जाएंगी।

पठन अवधि:

1 अक्टूबर - 15 अक्टूबर

1 जनवरी - 15 जनवरी

1 जून - 15 जून